महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय

मौनधारा (मून्दड़ी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

महर्षि-प्रभा

मासिक ई-पत्रिका

अंक-२०

अप्रैल-जून २०२४

विक्रमी संवत् २०८०-८१

कवीन्द्रं नौमि वाल्मीकिं यस्य रामायणी कथाम् ।
चन्द्रिकामिव चिन्वन्ति चकोरा इव साधवः ।।

संरक्षक

श्री बंडारु दत्तात्रेय
(महामहिम राज्यपाल)

श्री नायब सिंह सैनी
(मुख्यमंत्री हरियाणा)

श्रीमती सीमा त्रिखा
(माननीय उच्च शिक्षा मंत्री)

मार्गदर्शक

प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज
(कुलपति)

डॉ. बृज पाल
(कुलसचिव)

सम्पादक

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे

सहसम्पादक

डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र

डॉ. शर्मिला

डॉ. गोविन्द वल्लभ

ई-मेल – publication@mvsu.ac.in

MVSUOFFICIAL

mvsu.ac.in

सम्पादकः

भारतीयसंस्कृतेः मानवीय जीवनमूल्याधारितमाधारः आदिकालतः एव प्राणिमात्रस्य कल्याणाय स्वस्य जीवनमपि समर्पितुम् प्रेरयति । 'त्यजेदेकं कुलस्यार्थे.....आत्मार्थे पृथिवीं त्येजेत्' इत्युद्घोषः कृतमासीत् आस्माकं ऋषिभिः । एषा भावना एव भारतीयानां कृते औदार्य पूर्णजीवनं जेतुं प्रेरयति । परं एतादृशी भावना यदि विकृतरुपं धारयति चेत् राष्ट्राय समाजाय च घातकं भवति । मानव जीवने सद्गुणानां महत्त्वमस्ति परं यदि सद्गुणाः विकृते रूपे उचितमनुचितंञ्च विवेकं व्यक्त्वा सर्वान् प्रति औदार्य भावं प्रदशयति तदा एतेद सद्गुणाः एव विनाशस्य कारणं भवन्ति ।

भारतीया संस्कतिः जीवन्त गतिमानं च अस्ति । परं सद्गुण विकृत कारणवशात् द्विसहस्त्र वर्षाणि यावत् वैदेशिक आक्रान्ताभिः प्रभाविता आसीत् । एषा उक्तिः सत्यं प्रतीयते यत् 'यावच् सिंहाः स्वयं स्वेतिहासं नैव रचयन्ति तावत् आखेरकाणां दृष्टिः दृष्टिगोचरो भविष्यति'।

इदमेव कारणमस्ति यत् भारतीय जनाः स्व गौरवपूर्णमितिहासं विस्मृत्य वैदेशिकाक्रान्ताभिः लिखितमितिहासं सत्यं स्वीकृत्य आत्महीनतायाः वशीभूता सन्ति । अधुना यावत् अस्माकं शिक्षा व्यवस्थायाः इदमेवस्वरुपं दृश्यते ।

वर्तमान सन्दर्भे वयं पश्यामः चेत् यत् राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मध्ये कश्चित् परिवर्तनस्याशा दृश्यते । परं एतस्य व्यवहृति यदि न भविष्यति चेत् परिवर्तनस्य आशा न अस्ति । राष्ट्रीय शिक्षा नीतौ राष्ट्रीया शिक्षायाः तत्वानि निहितानि सन्ति परं तेषां शिक्षायां व्यवहारं कथं भवेत् एतदस्माकं दायित्वमस्ति । संस्कृत विश्वविद्यालयस्य दायित्वमधिकमस्ति यतोहि भारतीय शिक्षायाः ज्ञान परम्परायाः च आधारः संस्कृते निहितमस्ति । भारतीय शिक्षायां भारतस्य समावेश संस्कृत सेविनः विद्वान्सः अस्यां दिशायां प्रयासं कुर्युः ।

संस्कृत ग्रन्थेषु सर्वं निहितमस्ति । संस्कृतं केवलं भाषामात्रमेव नास्ति । विश्वेऽस्मिन् यदपि ज्ञानमस्ति तद् सर्वं संस्कृत वाङ्मये निहितमस्ति । भारतीय परम्परायां एतद्ज्ञानं आध्यात्मिकं भौतिकञ्च उभयोः समन्वयेन सहितमस्ति । अनेन एव विश्व कल्याणभावना प्रसृतोऽस्ति । भारतीय संस्कृतेः आधारः इयं भावना संस्कृतं विना न संभवति । अनेन एव राष्ट्रीय भावना एव दृढीभूता भवति ।

समस्तेऽपि संस्कृत साहित्ये देशप्रेम्णः सरितधाराः प्रवहन्ति । माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः इति भावना राष्ट्रं प्रति स्वकर्त्तव्यानि पालयितुम् प्रेरयति ।

'वयं राष्ट्रे जागृताम पुरोहिताः' इत्युक्ति सत्यं प्रतीयते यत् 'यावत् सिंहाःस्वयं स्वेतिहासं नैव रचयन्ति तावत् आखेटकाणां दृष्टिः दृष्टिगोचरो भविष्यति' । इदमेव कारणमस्ति यत् भारतीया जनाः एव गौरवपूर्णमितिहासं विस्मृत्य वैदेशिकाक्रान्ताभिः लिखितमितिहासं सत्यं स्वीकृत्य आत्महीनतायाः वशीभूता सन्ति। अधुनायावत् अस्माकं शिक्षा व्यवस्थायाः इदमेवस्वरुपं दृश्यते ।

वर्तमान सन्दर्भे वयं पश्यामः चेत् यत् राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मध्ये कश्चिचतं परिवर्तनस्याशा दृश्यते । परं एतस्य व्यवहृति यदि न भविष्यति चेत् परिवर्तनस्य आशा न अस्ति । राष्ट्रीय शिक्षा नीतौ राष्ट्रीया शिक्षायाः तत्वानि निहितानि सन्ति परं तेषां शिक्षायां व्यवहारं कथं भवेत एतदस्माकं दायित्वमस्ति ।

10 वें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विश्वविद्यालय में योग शिविर का आयोजन

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा 21 जून, 2024 को 10 वां अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस विश्वविद्यालय के टीक परिसर में मनाया गया। कार्यक्रम मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्र जिंदल ने इस अवसर पर कहा कि योग भारतीय संस्कृति का अहम हिस्सा है, जिसे हमारे ऋषि-मुनियों ने सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए निर्मित किया था।

विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने अपने उद्बोधन में योग के महत्त्व को बताते हुए कहा कि वर्तमान में समाज में नई-नई बिमारियां पनप रही हैं, जिनसे बचने के लिए निरन्तर योग करते रहना चाहिए। योग हमें शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शान्ति प्रदान करता है और हमें श्रेष्ठ नागरिक बनाने में लाभदायक है।

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए योग विभाग निरंतर प्रयासरत है। इस दौरान डॉ. देवेन्द्र सिंह ने सभी प्रतिभागियों को कॉमन योगा प्रोटोकॉल का अभ्यास करवाया। कार्यक्रम के दौरान योग विशेषांक पत्रिका का विमोचन किया गया। इस मौके पर प्रो. भाग सिंह बोदला, डॉ. जगतनारायण, श्री अमित वशिष्ठ, डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे, डॉ. रामानन्द एवं समस्त गैर-शैक्षणिक कर्मचारी उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय द्वारा दिनांक 09 से 27 अप्रैल 2024 तक 85 योग शिविरों का आयोजित

योग-शिक्षा स्कूल और विश्वविद्यालयीय शिक्षा की पूरक हो सकती है। छात्रों को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से स्वास्थ्य प्रदान करके उन्हें श्रेष्ठ नागरिक बनाने व उनके सर्वांगीण विकास के लिए विश्वविद्यालय में योग विभाग द्वारा गत सैमेस्टर नवम्बर 2023 में 74 स्कूलों में तीन दिवसीय योग शिविरों में लगभग 6500 विद्यार्थियों को योग सिखाया गया। इसी श्रृंखला को आगे बढाते हुए योग विभाग के प्रभारी डॉ. देवेन्द्र सिंह की अध्यक्षता में योग-विभाग के अध्यापक श्री रोहित एवं श्री अमन के मार्गदर्शन में डिप्लोमा (योग), बी.ए. (योग) एवं एम.ए. (योग) के छात्रों ने तीन दिवसीय योग-शिविरों के माध्यम से दिनांक 09 से 27 अप्रैल 2024 तक 85 स्कूलों के लगभग 7000 विद्यार्थियों को योग सिखाया गया।

पर्यावरण प्रदूषण और भारतीय चिन्तन

आज जहाँ चारों ओर वैज्ञानिक प्रगति से विश्व अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रहा है वहीं दूसरी ओर एक गम्भीर संकट चारों ओर से विश्व को घेरे हुए हैं। वह संकट है पर्यावरण प्रदूषण का । आज विश्व वैज्ञानिक प्रगति की होड़ के कारण चारों ओर से प्रदूषित पर्यावरण से स्वयं को बचाने में असमर्थ सा दिखाई दे रहे हैं। इस भयंकर संकट से बचने का यदि उपाय नहीं खोजा गया तो विश्व को इस जहरीले विषधर से कोई नहीं बचा सकता है।

पर्यावरण प्रदूषण एक विश्वव्यापी समस्या है। निरन्तर हो रहे औद्योगिक विकास के परिणामस्वरूप उनसे निकलने वाले धुएं से पृथ्वी का कवच ओजोन क्षतिग्रस्त हो रहा है कहीं-कहीं तो उसमें बड़े-बड़े छिद्र हो गये हैं। यह विश्व के लिए खतरे का संकेत है। यह संकट क्यों उत्पन्न हुआ? यह एक विचारणीय प्रश्न है। प्रकृति का अपना एक नियम है उसका चक्र पर्यावरण को सन्तुलित रखने का कार्य करता है यदि उसके साथ कोई छेड़-छाड़ न की जाय तो वह सुरक्षित रहता है और सभी को रक्षित करता है। इसीलिए हमारे पूर्वजों ने प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाये रखते हुए प्रगति का रास्ता अपनाया था। आज अधिकाधिक भौतिक सुख की लालसा में प्रकृति का सुरक्षा चक्र नष्ट हो रहा है। परिणामतः प्रकृति का सन्तुलन बिगड़ने लगा है और यह एक समस्या बनकर विश्व के सामने उपस्थित है।

पर्यावरण का आधार पञ्च भौतिक तत्व -

पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि तथा आकाश इन पांच भौतिक तत्वों से सृष्टि की रचना हुयी है। प्रकृति का प्रत्येक प्राणी इसी भौतिक सृष्टि का आधार है। मानव भी इस सृष्टि का एक अंग है। पर्यावरण को सन्तुलित रखने के लिए प्रत्येक प्राणी का इन पाँच भौतिक तत्वों (पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि तथा आकाश) के साथ परस्पर सन्तुलन बनाये रखना आवश्यक है। प्रकृति के प्रत्येक तत्व अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रखते हुये भी परस्पर आश्रित है। प्रकृति की प्रत्येक क्रिया परस्पर सन्तुलन बनाये रखती है। वायु से पानी शुद्ध होता है और पानी से वृक्षों की सिंचाई होती है तथा वृक्षों से वायु शुद्ध होती है। इसी प्रकार प्रकृति के प्रत्येक तत्व में समन्वय है। पृथ्वी एक चेतन तत्व है हमने माता कहा है 'माता भूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्याः ।' भूमि हमें अन्न देती है प्रत्येक प्राणी के जीवन का आधार भूमि है हमने भूमि को विष्णु की पत्नी कहा है। इसीलिए हम प्रातः भूमि पर पैर रखते समय भूमि को प्रणाम करके उससे क्षमा मांगते हैं।

समुद्र वसने देवि पर्वतस्तनमण्डले,
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यम् पादास्स्पर्शं क्षमस्व मे !

पृथ्वी के प्रति इस प्रकार का भाव जब होता है तो पृथ्वी को प्रदूषण से मुक्त रखने का भाव भी मन में स्वतः आता है करोड़ों जीव जन्तुओं का निवास स्थान भूमि की पवित्रता बनाये रखना हमारा कर्तव्य है।

जल को जीवन कहा गया है। हमने जल को देवता माना है। यही भाव हमें जल को प्रदूषित करने से रोकता है परन्तु आज भौतिकता की होड़ में जल को मात्र पानी समझ कर उसका दुरुपयोग किया जा रहा है। नदियों को प्रदूषित किया जा रहा है। यही प्रदूषित जल हमारे शरीर में जाता है। तो वह रोगों को उत्पन्न करता है। इसलिए नदियों की पवित्रता बनाये रखना, जल का दुरुपयोग रोकना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।

हमारे शरीर को संचालित करने के लिए प्राणवायु का आधार वृक्ष हैं। आज वनों का विनाश हो रहा है। भौतिक प्रगति की होड़ में वृक्षों का विनाश किया जा रहा है। हमने वृक्षों के प्रति भी देवत्व का भाव रखा। वृक्षों को देव मान कर उनकी पूजा की प्रत्येक वृक्ष जीवन का आधार है उसमें किसी न किसी देवता का वास है। वृक्षों से शुद्ध वायु मिलती है वृक्ष ही वर्षा का आध र है। पर्यावरण को सन्तुलित करने के लिए वृक्षों का सर्वाधिक योगदान है। इसीलिए वैदिक ऋषि कहता है। नमः वृक्षेभ्यः, वनानाम् पतये नमः, औषधीनाम् पतये नमः, अरण्यानाम् पतये नमः । (यजु० 16 17, 18, 19, 20) वैदिक मंत्रों में वृक्षों एवं वनस्पतियों को सबके लिए हितकारी और शान्तिदायक होने की कामना की गयी है।

हमने अग्नि को देवता माना है। अग्नि सबको भस्म करके पवित्र करने की क्षमता रखता है। पर्यावरण को शुद्ध करने का सर्वोत्तम साधन यज्ञ को माना गया है। यज्ञ का आधार अग्नि ही है। यज्ञ तह अग्निहोत्र है जिसके माध्यम से घी और हवन सामाग्री की आहुति, पवित्र मन्त्रों का उच्चारण करके अग्नि में दी जाती है। अग्नि इन द्रव्यों को अत्यधिक शक्तिशाली बनाकर वायु, जल, पृथ्वी और आकाश में पहुंचा देता है। जिससे वातावरण शुद्ध, पवित्र, प्राणदायक और स्वास्थ्यप्रद हो जाता है। इसीलिए हमारे ऋषिमुनियों ने यज्ञ को जीवन का आधार माना और प्रतिदिन प्रत्येक गृहस्थ व्यक्ति को यज्ञ करना चाहिए ऐसा विधान दिया। अन्तिम तत्व आकाश है जिसका गुण ही शब्द ! आज ध्वनि प्रदूषण एक अभिशाप बनता जा रहा है।

विशेषरूप से शहरों में वाहनों, ध्वनि विस्तारक यन्त्रों तथा यन्त्रों के चलने से पर्यावरण का सन्तुलन बिगड़ रहा है। आकाश तत्व की शुद्धि के लिए हमने मधुर भजन, मन्त्रोंचारण, कीर्तन आदि की व्यवस्था की थी। पवित्र मन्त्रों के उच्चारण से वातावरण शुद्ध होता है, शब्दों की पवित्रता बनी रहती है।

आज मनुष्य अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति का शोषण कर रहा है। प्रकृति के इन पाँचों तत्वों की सर्वथा उपेक्षा हो रही है। यही प्रवृत्ति एक दिन विनाश का कारण बन सकती है। आज विश्व पूर्ण रूप से इस चक्रव्यूह में फंसा दिखायी दे रहा है। आज का मानव चाहे इससे बेखबर हो परन्तु हमारे ऋषिमुनियों ने इस पर गहन चिन्तन किया था। और प्रकृति का सन्तुलन न बिगड़े इसकी व्यवस्था भी की। इसीलिए उन्होंने भौतिक उन्नति के साथ प्रकृति के संरक्षण की भी व्यवस्था की। उन्होंने कहा कि प्रकृति के प्रत्येक तत्व में ईश्वर का वास है।

'ईशावास्यमिदं सर्वम् यत्किञ्चित् जगत्याम् जगत्' प्रकृति का 'सन्तुलन न बिगड़े इसलिए' उन्होंने प्रकृति के साथ जीवन्त सम्बन्ध स्थापित किया और एक अनुपम तरीका निकाला जिससे प्रकृति का सन्तुलन बना रहे तथा संवर्द्धन होता रहे। समाज सदैव जागरुक रहे इसकी व्यवस्था की जिससे प्रकृति के प्रति दैवीय भाव स्थापित हो।

प्रथाएं एवं परम्पराएं पर्यावरण रक्षा में सहायक-

हमारे ऋषियों ने समाज में कुछ प्रथाएं एवं परम्पराएं प्रचलित की जिससे प्रकृति के प्रति आदर भाव बना रहे। भारतीय परम्परा के अनुसार प्रत्येक परिवार को कुछ आचार-विचारों का पालन अवश्य करना चाहिए। वे क्रियायें हमें याद दिलाती है कि प्रकृति हमारे लिए पूजनीय है शोषणीय नहीं। इन आदर्शों का पालन करने से प्रकृति के प्रति श्रद्धा निर्माण होती है। वृक्षों की रक्षा करना महान पुण्य का कार्य माना। इसीलिए बरगद के पेड़ लगाने से मातृऋण तथा पीपल का वृक्ष लगाने से पितृऋण से मुक्ति मिलती है। केला, पीपल, तुलसी आदि वनस्पतियां हमारे लिए पूज्य बन गयी। हमारी यह श्रद्धा पृथ्वी, जल, पर्वत आदि के प्रति भी निर्माण हुयी। सभी में हमने देवत्व के दर्शन किये हैं। वृक्षों को काटना पाप माना जाता है। महाराष्ट्र के पहाड़ों में वनों को 'देवराई' कहा जाता है। वहां किसी भी पेड़ को काटना या टहनी को काटने की अनुमति नहीं है और न ही वहां पशु-पक्षियों का शिकार किया जाता वहां के लोगों का विश्वास है कि यदि वन परम्परा से छेड़-छाड़ की जाती है तो वन देवता दण्ड देते हैं। भले ही आज के तथाकथित प्रगतिवादी इसे अन्ध विश्वास कहे परन्तु पर्यावरण रक्षा में यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

कर्म का विधान एवं पाप की अवधारणा -

भारतीय परम्परा में कर्म का विधिविधान और पाप की अवधारणा भी पर्यावरण रक्षा में सहायक है। यदि कोई व्यक्ति जीवित वृक्ष को काटता है या अकारण प्राणी का वध करता है तो पाप का भागी होता है प्रकृति के तत्वों को माँ तथा ईश्वर का दर्जा प्रदान है भारतीय संस्कृति में प्रकृति में विद्यमान उन सभी तत्वों को देव तुल्य पूज्य माना है जो जीव जगत का पोषण तथा रक्षण करते हैं। वातावरण में प्रदूषण को रोकने तथा ऋतुओं को स्वाभावितक बनाये रखने के लिए वृक्षों के रोपण तथा संरक्षण को पुण्य माना है तथा हरे वृक्षों को काटना जीव हत्या के समान माना है।

वृक्ष निःस्वार्थ दाता है उनकी देन अमूल्य है उनके वानस्पतिक गुण अद्वितीय है उनकी अनुपस्थिति में जीवित रहने की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इसीलिए वृक्षों की सुरक्षा एवं उनके प्रति आभार व्यक्त करने के लिए वृक्षों की पूजा का विधान रखा गया।

जल के कण-कण में प्राण शक्ति विद्यमान है वह आरोग्य प्रदाता है जीवन दाता है। जल प्रदूषण को रोकने के लिए नदियों के प्रति देवत्व का भाव रखकर उनकी पूजा का विधान दिया। आज जब विश्व पर्यावरण प्रदूषण की भयंकर समस्या से गुजर रहा है। ऐसे समय में पर्यावरण सुरक्षा के लिए भारतीय दृष्टिकोण को अपनाना ही एक मात्र उपाय है। जिस उपाय को हम भारतीय अनादि काल से अपनाते आ रहे हैं।

पर्यावरण रक्षा के लिए विश्वगुरू भारत का आदिम सिद्धान्त आज भी उतना ही प्रासांगिक है। पर्यावरण रक्षा के लिए मनुष्य में विवेक जागरुकता और कर्तव्य बोध जागृत होना चाहिए। जिसकी उत्पत्ति धार्मिक आस्था एवं हमारे ऋषियों द्वारा बताए गये विधि-विधानों से हो सकती है। उन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर हम प्रकृति के सन्तुलन को बनाए रख सकते है। इसी से पर्यावरण की सुरक्षा सम्भव है। नान्यापन्थाः।

डॉ० कृष्ण चन्द्र पाण्डे
विभागाध्यक्ष (हिन्दू अध्ययन)

महान साहित्यकार गुरुगोविन्द सिंह

गुरुगोविन्द सिंह के विलक्षण व्यक्तित्व में सन्त, सेनानी और साहित्यकार का अद्भुत संगम है। उन्होने केवल खालसा पंथ की स्थापना ही नहीं की अपितु उच्च कोटि का साहित्य सृजन भी किया है। गुरु गोविन्द सिंह की साहित्यिक उपलब्धि की जानकारी बहुत कम लोगों को है। उनके काव्य की अन्तः प्रेरणा युगीन परिस्थितियों से प्रभावित थी। उनका उद्देश्य ऐसा साहित्य सृजन करना था जिसे पढ़कर और सुनकर लोगों के दिलों में एकता का भाव जाग्रत हो, और न्याय मुक्त धर्म-कर्म की भावना विकसित हों।

गुरु गोविन्द सिंह ने अपनी रचनाओं में ईश्वर के भक्ति भावमय रुप के साथ उनके विनाशकारी रुप का भी चित्रण किया है। उनकी रचनाओं में भक्ति और वीरता दोनों की अभिव्यक्ति है। उन्होंने पुराणों, रामायण और महाभारत से भारतीय महापुरुषों की गाथाओं के वीरतापूर्ण प्रेरक प्रसंगों के आधार पर रचनाएं की और अपने शिष्य कवियों से करवायीं।

गुरु गोविन्द सिंह का काल साहित्य रचना विभाजन के अनुसार रीतिकाल में आता है। उस काल में कवि प्रायः श्रृंगार परक रचनाएं करते थे और रीति ग्रन्थ लिखते थे। श्रृंगार और विलास के उस काल खण्ड में उन्होंने भक्ति और वीर रस युक्त काव्यों का निर्माण किया। यह लोगों के नवजागरण की ज्योति जलाने की प्रयास था। इस काल के वे एक मात्र ऐसे कवि थे जिनकी रचना के पीछे कोई सांसारिक नहीं थी। उनकी रचना जीवनोपार्जन का साधन नहीं थी। साहित्य सृजन में उनकी एक मात्र अभिलाषा धर्म स्थापना थी। उनकी रचनाएं दशम-ग्रन्थ में संकलित हैं। उनकी 17 प्रमाणिक रचनाएं है -

- जप साहिब
- अकाल स्तुति
- विचित्र नाटक
- चण्डी चरित्र उक्ति विलास
- चण्डी चरित्र
- वार श्री भगवती जी दी
- चौबीस अवतार
- मीर मेहंदी
- ब्रह्मा अवतार
- रुद्र अवतार
- शास्त्र नाम माला
- ज्ञान प्रबोध
- पाख्यान चरित्र
- हजारे दो शब्द
- सवैये
- तैंतीस सवैये
- जफरनामा

दशम ग्रन्थ में संकलित गुरु गोविन्द सिंह की रचनाए हिन्दी (ब्रज भाषा) में तो हैं लेकिन अधिकांश गुरुमुखी में लिपिबद्ध हैं। पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला में सिख दर्शन विभाग के आचार्य डॉ. जोधसिंह ने सम्पूर्ण दशम ग्रन्थ का हिन्दी में अनुवाद किया है। गुरु गोविन्द सिंह के साहित्यिक पक्ष की जानकारी कम लोगों को है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समग्र मूल्य हो सके इसके प्रयास की आवश्यकता है उनका साहित्य लोगों के समक्ष लाया जाना चाहिए।

देह शिवा बर मोहे इहै, शुभ करमन ते कबहूं न टरौं।
न डरौं अरि सौं जब जाय लरौं, निश्चय कर अपनी जीत करौं।।

अर्थ: हे शिवा, मुझे यह वरदान दें कि मैं हमेशा शुभ कर्म करूं और कभी भी उनसे न हटूं। जब मैं युद्ध में जाऊं, तो मैं अपने शत्रुओं से न डरूं और दृढ़ निश्चय के साथ अपनी जीत सुनिश्चित करूं।

शीतल देवी
आचार्य द्वितीय वर्ष (साहित्य)

सच्चा सहारा तेरा माँ

सच्चा सहारा तेरा मेरी माता री सुण बनभौरी आली।
करो बेड़ा पार मात शारदे बीच सभा में थ्याली ।।

प्रथम तो तूं शैलसुता और दुजै ब्रह्मचारिणी सै
रुप तीसरा चंद्रघंटा मस्तक चंद्र धारणी सै
चौथा रुप कुष्मांडा मां समस्त रोग तारणी सै
पांचवां स्कंदमाता और छटे में कात्यायनी सै
रुप सातवां काली भवानी सब कहते खप्पर आली ।।

आठवीं बार महागौरी थी चंड मुंड तनै मार दिये
नौवीं बार में सिद्धिदात्री सारे कारज सार दिये
कृपा करी तनै मात वैष्णो ध्यानु श्रीधर तार दिये
देवताओं ने करी स्तुति फेर तनै भी उपकार किये
रक्तबीज भी मार दिये ली हाथ खून की प्याली ।।

मात शीतला मन्शा चन्डी तू ही मात ज्वाला सै
बाला सुन्दरी पहाडां ऊपर सब तै रुप निराला सै
चामुंडा चन्डघाती तूं ही रुप बड़ा बिकराला सै
भैरवी भवानी भद्रा तेरै गल मुंडो की माला सै
बनभौरी में भवन निराला कोए कहता बेरी आली ।।

केहरी गऊ खर तेरे वाहन हंस कहीं फूल मां
हृदय बीच में भरदे रोशनी मेट दिये सब भूल मां
गुरु रणबीर जी नै ज्ञान दे दिया बता दिये उसुल मां
कहै सोनू शास्त्री तेरा ध्यान करुंगा बोलूं नहीं फिजूल मां
कर लिये कबूल मां आज एक हाजरी या मेरे आली।

सोनू शर्मा
आचार्य द्वितीय वर्ष (साहित्य)

सुभाषितानि

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्।।

सभी सुखी हों, सभी निरोगी रहें, सबकी भलाई हो और कोई किसी प्रकार का दुःख न पाये (भोगे)। यह लोकमंगल की भावना विद्या (ज्ञान) प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में प्रेम, सहानुभूति, त्याग, सहिष्णुता, विचारशीलता आदि गुणों का विस्तार करती है।

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

यह आत्मीय है या पराया है- इस प्रकार का चिन्तन तुच्छ विचार वाले करते हैं। उदार विचारधारा के व्यक्ति में तो पूरी धरती के लोगों के प्रति परिवार (कुटुम्ब) के समान आत्मीयता होती है।

प्रत्यहं प्रत्यवेक्षेत नरश्चरितमात्मनः।
किन्नु मे पशुभिस्तुल्यं किन्नु सत्पुरुषैरिति।।

मनुष्य को प्रतिदिन अपने आचरण की समीक्षा करनी चाहिए और विचार करना चाहिए कि मेरा आज कौन सा आचरण पशु के समान हुआ और कौन सा सज्जनों की तरह।

प्रश्नमञ्जरी

(१) यजुर्वेद में अध्याय हैं-
(क) 37 (ख) 40 (ग) 99 (घ) 42

(२) 'भगवद्गीता' किस ग्रन्थ का अंश है-
(क) रामायण (ख) महाभारत (ग) उपनिषद् (घ) वेद

(३) गीता का दूसरा नाम क्या है-
(क) सांख्ययोग शास्त्र (ख) कर्मयोगशास्त्र (ग) भक्तियोग शास्त्र (घ) धर्मशास्त्र

(४) कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेसु.....। श्लोक किस ग्रन्थ में है-
(क) रामायण (ख) गीता (ग) वेग (घ) पुराण

(४) नाट्यशास्त्र के प्रणेता हैं ?
(क) पराशर (ख) भरतमुनि (ग) कपिलमुनि (घ)इनमें से कोई नहीं

(६) धनुर्वेद किस वेद का उपवेद है-
(क) यजुर्वेद (ख) अथर्वेद (ग) सामवेद (घ) ऋग्वेद

(७) सामवेद का उपवेद है-
(क) धनुर्वेद (ख) अर्थर्वेद (ग) आयुर्वेद (घ) गान्धर्ववेद

(८) आयुर्वेद में शरीर रक्षा के कितने तत्वों का विवेचन है -
(क) 13 (ख) 09 (ग) 08 (घ) 04

(९) ऋग्वेद का उपवेद है -
(क) अर्थर्वेद (ख) धनुर्वेद (ग) आयुर्वेद (घ) गान्धर्ववेद

(१०) षड्दर्शनों के अन्तर्गत नही हैं-
(क) सांख्य (ख) वेदान्त (ग) योग (घ) वैभाषिक

(उत्तराणि अग्रिमे अङ्के)

(नवदृशङ्कस्य उत्तराणि)

(1) चम्पू (2) यमुना (3) वशिष्ठ (4) मार्कण्डेय पुराण (5) 567
(6) समेधा ऋषि (7) 18 (8) वेदव्यास (9) महर्षि वाल्मीकि (10) कठोपनिषद्

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय

मौनधारा (मून्दडी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ (w.e.f. 10-06-2024)

आचार्य/एम.ए.

वेद	दर्शन
व्याकरण	धर्मशास्त्र
ज्योतिष	योग (M.A.)
साहित्य	हिन्दू अध्ययन (M.A.)

शुल्क 2830/- प्रति वर्ष

शास्त्री प्रतिष्ठा (B.A. Honors) (NEP 2020)

वेद	दर्शन
व्याकरण	धर्मशास्त्र
ज्योतिष	योग (B.A.)
साहित्य	

शुल्क 2700/- प्रति वर्ष

डिप्लोमा पाठ्यक्रम (अंशकालीन)

वेद

ज्योतिष

कर्मकाण्ड (पौरोहित्य)

वैदिक-गणित

वास्तुशास्त्र

संस्कृत भाषा दक्षता

योग

(शुल्क 6,200/-)

विश्वविद्यालय में अध्ययन के लाभ-

- शास्त्री प्रतिष्ठा (स्नातक ऑनर्स) में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत पाठ्यक्रमों का समावेश।
- क्षमता सम्वर्द्धन, कौशल सम्वर्द्धन और मूल्य योजना पाठ्यक्रमों का समावेश ।
- रोजगार परक पाठ्यक्रमों का समावेश ।
- संस्कृत विषयों के साथ आधुनिक विषयों का अध्ययन ।
- हिन्दी, अंग्रेजी, राजनीति विज्ञान, इतिहास आदि वैकल्पिक विषयों के पाठ्यक्रमों का समावेश।
- शास्त्री प्रतिष्ठा करके प्रशासनिक सेवा (I.A.S., I.P.S) की परीक्षा में बैठने का भी सुनहरा अवसर ।
- आचार्य (स्नातकोत्तर) में परम्परागत विषयों के पाठ्यक्रम का समावेश।
- भारतीय सेना में धर्म शिक्षक (R.T./J.C.O) बनने का सुनहरा अवसर ।
- विश्वविद्यालय में अनुसन्धान हेतु सुनहरा अवसर ।
- विश्वविद्यालय के समृद्ध पुस्तकालय में अध्ययन का अवसर ।

एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा

- जीवन प्रबंधन एवं भगवद्गीता (शुल्क 6,200/-)
- अंग्रेजी-हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद (शुल्क 9,000/-)

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:-

वेबसाइट:-

www.mvsu.ac.in

सम्पर्क सूत्र-

95881-66090, 87089-97181

विशेष- विश्वविद्यालय में छात्र-छात्राओं के लिए छात्रावास एवं भोजन की व्यवस्था भी उपलब्ध है।

प्रवेश हेतु नीचे दिए गए पते पर सम्पर्क करें

अस्थाई परिसर- महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, टीक परिसर

(यह परिसर कैथल से कुरुक्षेत्र, ढाण्ड मार्ग पर टीक गाँव से पहले है)

कार्यालय परिसर- डॉ भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, जगदीशपुरा (अम्बाला मार्ग, कैथल- 136027)